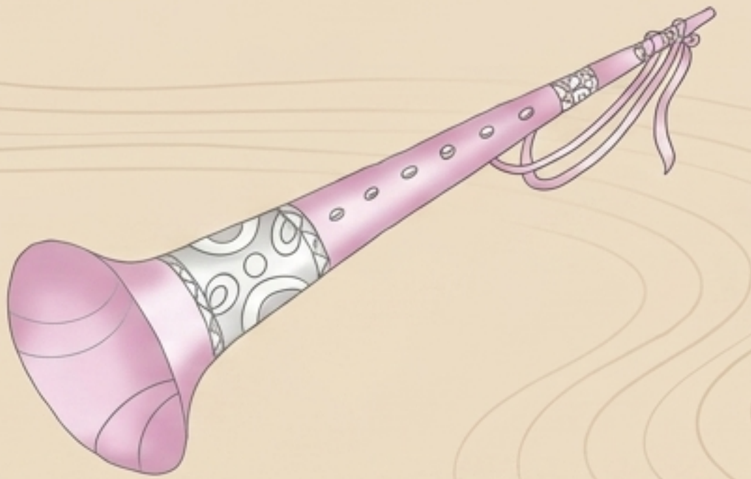

नौबतखाने में इबादत

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का जीवन दर्शन

यतींद्र मिश्र के मूल निबंध पर आधारित एक दृश्य-यात्रा

NotebookLM

एक शहनाई का भूगोल

डुमराँव, बिहार

सोन नदी के किनारे मिलने वाली ‘नरकट’ घास (रीड), जिसके बिना शहनाई बज नहीं सकती।

+

काशी, उत्तर प्रदेश

पंचगंगा घाट स्थित बालाजी मंदिर की ड्योढ़ी, जहाँ खानदानी रियाज़ की गूँज उठती है।

=

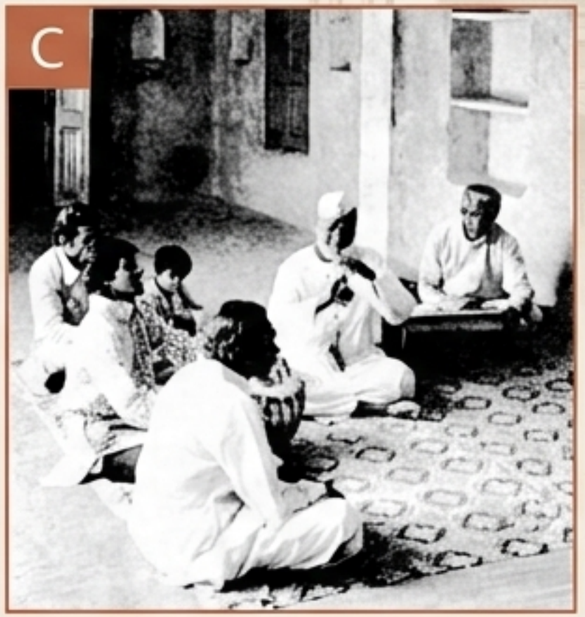

अमीरुद्दीन (बिस्मिल्लाह खाँ)

एक ऐसी ‘मंगलध्वनि’ का जन्म, जो इन दोनों स्थानों को हमेशा के लिए अमर कर देती है।

NotebookLM

प्रेरणा की अनूठी वर्णमाला

रसूलन और बतूलन बाई

बालाजी मंदिर के रास्ते में इन गायिकाओं की ठुमरी, टप्पे और दादरे ने बचपन में संगीत के प्रति पहली आसक्ति जगाई।

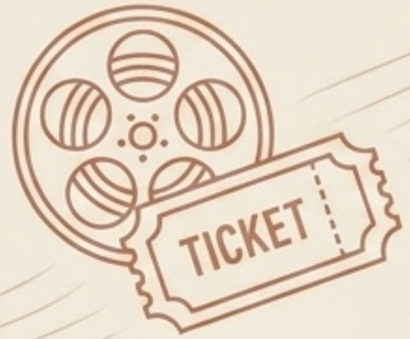

सुलोचना का सिनेमा

थर्ड क्लास का 6 पैसे का टिकट। घंटों लाइन में लगकर पसंदीदा हीरोइन की कोई भी नई फिल्म न छोड़ने का बचपन का जुनून।

कुलसुम की कचौड़ी

देसी घी में कचौड़ी डालते समय छन्न से उठने वाली आवाज़ में भी नन्हें अमीरुद्दीन को संगीत के सारे 'आरोह-अवरोह' सुनाई देते थे।

NotebookLM

इबादत : ‘सच्चे सुर’ की अंतहीन तलाश

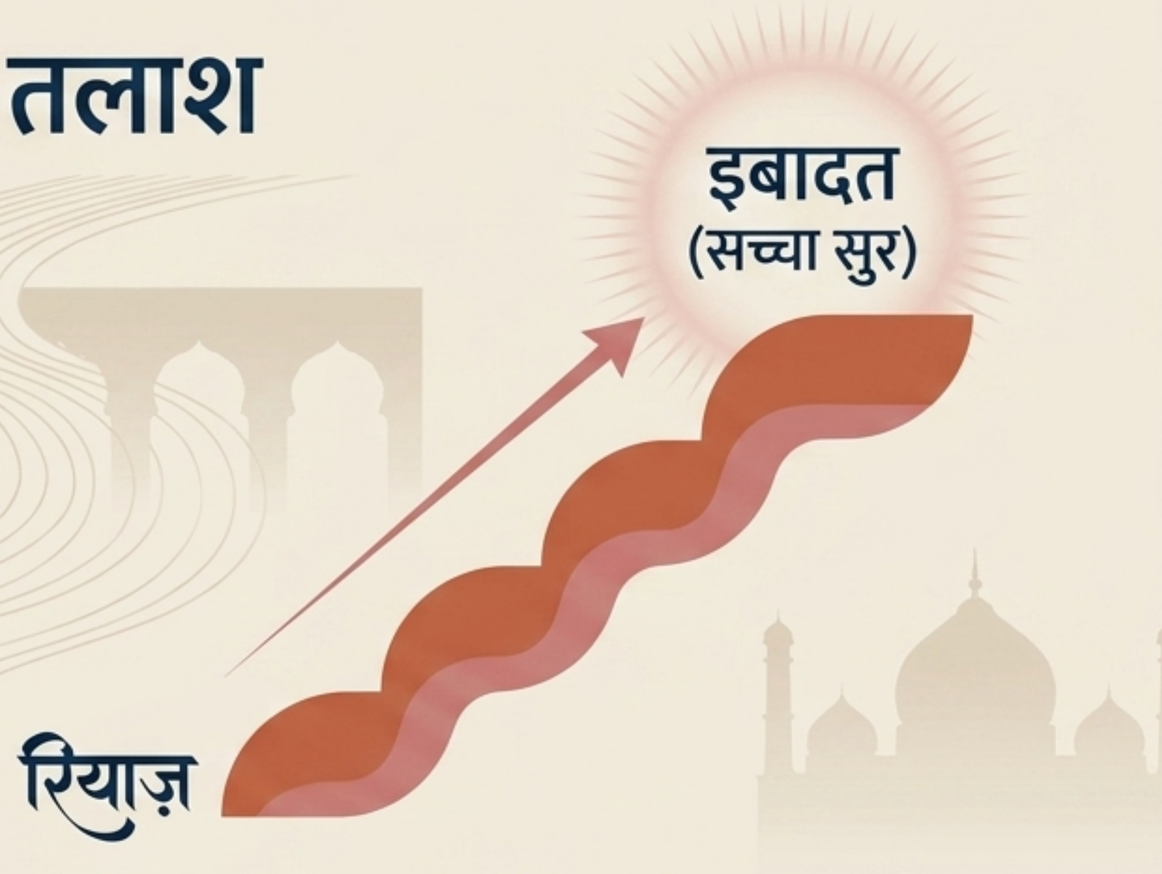

> “मेरे मालिक एक सुर बख्श दे...
> सुर में वह तासीर पैदा कर कि
> आँखों से सच्चे मोती की तरह
> अनगढ़ आँसू निकल आएँ।”

80 वर्ष की उम्र और पाँचों वक्त की नमाज़—सब कुछ सिर्फ एक सच्चे सुर को पाने की दुआ में खर्च।

कस्तूरी मृग : जिस तरह हिरन अपनी ही महक से परेशान होकर जंगल में वरदान खोजता है, वैसे ही बिस्मिल्लाह खाँ जीवन भर सातों सुरों को बरतने की तमीज़ सीखते रहे। यह उनकी कला के प्रति पूर्ण ‘जिजीविषा’ है।

NotebookLM

मुहर्रम : जब राग खामोश हो जाते हैं

मंगलध्वनि
(355 दिन)

शहनाई—आनंद और मंगल का प्रतीक।
बालाजी और विश्वनाथ मंदिर में शुभ रागों की गूँज।

अज़ादारी (मुहर्रम का 8वाँ दिन)

- कोई शहनाई नहीं, किसी भी राग-रागिनी का सख्त निषेध।
- दालमंडी में फातिमान के करीब 8 किलोमीटर तक नंगे पैर पैदल चलना।
- इमाम हुसैन की शहादत में रोते हुए 'नौहा' बजाना।

एक महान कलाकार का सबसे सहज, मानवीय और संवेदनशील रूप।

NotebookLM

गंगा-जमुनी तहज़ीब का जीवंत स्वरूप

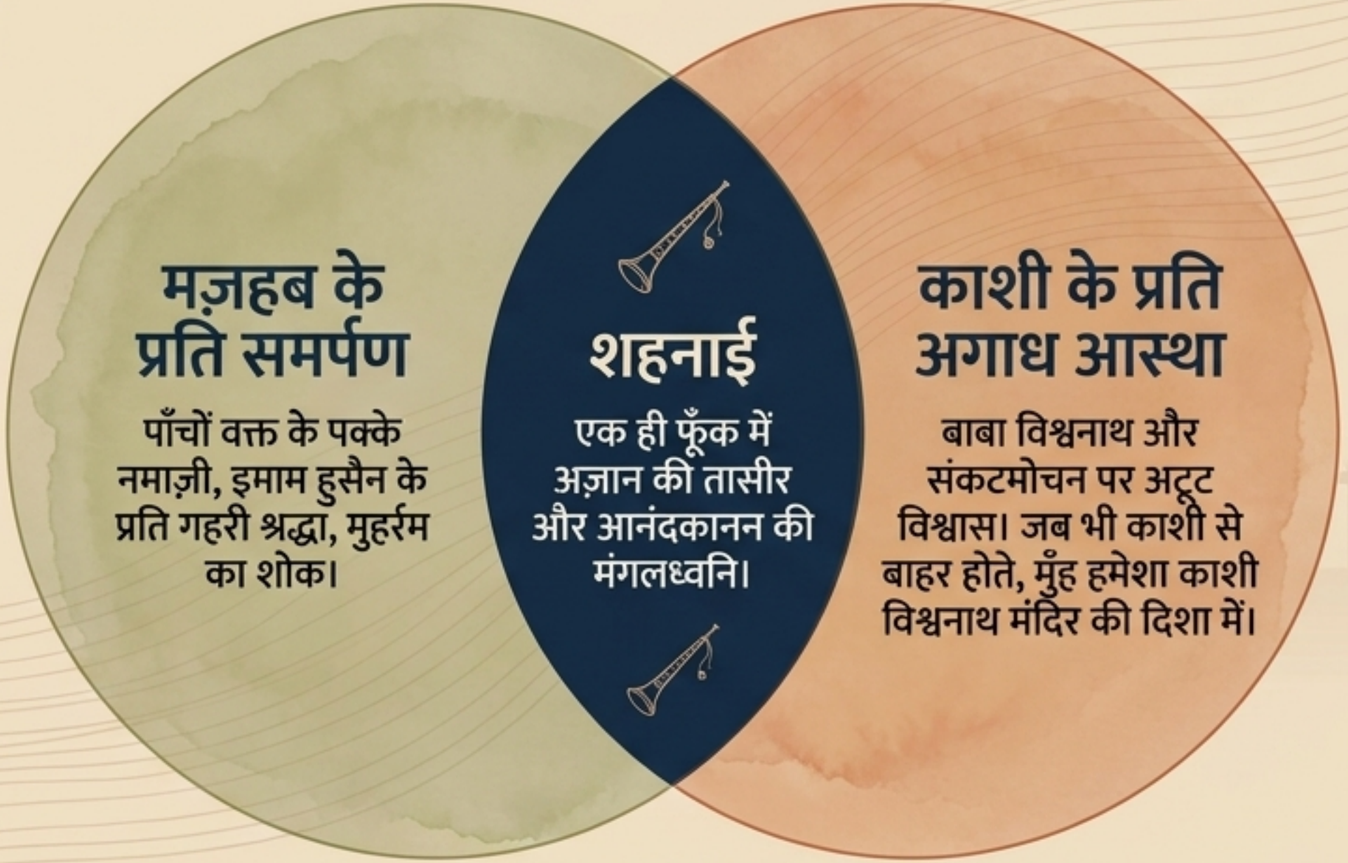

क्या करें मियाँ, ई काशी छोड़कर कहाँ जाएँ? गंगा मइया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ...
शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं इस धरती पर हमारे लिए।

NotebookLM

फटी तहमत और ‘भारत रत्न’

एक शिष्या का टोकना—‘बाबा! आपको भारत रत्न मिल चुका है, अब यह फटी लुंगी मत पहना करें।’

“धत्! पगली ई भारतरत्न हमको शहनइया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं...
तुम लोगों की तरह बनाव-सिंगार देखते रहते, तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई!”

मालिक से यही दुआ है कि ‘फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।’

NotebookLM

काशी के खोते हुए खज़ाने

स्वाद का जाना

पक्का महाल से मलाई बरफ वालों का चले जाना। देसी घी की वह कचौड़ी-जलेबी अब कहाँ?

संगीत के प्रति आदर

अब संगीत सभाओं में संगतियों और गायकों के लिए पहले जैसा सम्मान और कद्रदान नहीं रहे।

परंपराओं का लुप्त होना

कजली, चैती और अदब का पुराना ज़माना तेज़ी से बदल रहा है।

एक सच्चे सुर-साधक के रूप में उस्ताद को इस बदलती, खोखली होती संस्कृति की गहरी कमी खलती थी।

NotebookLM

आनंदकानन का नायाब हीरा

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ केवल अपनी अजेय संगीत-यात्रा या पुरस्कारों के लिए नहीं, बल्कि एकता के प्रतीक के रूप में अमर रहेंगे।

उन्होंने 80 वर्षों तक हमेशा दो कौमों को एक होने और आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा दी।

उनकी शहनाई भारत की साझी विरासत की सबसे मीठी आवाज़ है।

NotebookLM